MAH/MUL/02051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-19, Vol-07, July to Sept.2017

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

14) नागपूर शहरातील १९४२ चा स्वातंत्र्यलढा –एक चिकित्सक अध्ययन
प्रा. डॉ. राजु भा. खरडे, जि.नागपूर || 64

15) लोकसाहित्य आणि समाज जीवन
श्री. अनिल हनमनलु मुनगेलवार, जि.नांदेड || 71

16) पंचायतराज आणि ग्रामीण विकास
प्रा.डॉ. अशोक सालोटकर, नागभीड. || 74

17) ताण / तणावाचे व्यवस्थापन
प्रा. डॉ. एम बी. राठोड, जि. यवतमाळ || 76

18) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनात विदर्भातील स्त्रियांचे योगदान
प्रा. डॉ. विष्णू रायभान पडवाल, जि. बुलडाणा || 79

19) दुर्गों का सुरक्षात्मक योगदान उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में।
डॉ. राजा हृदयेश अण्डोला, अल्मोड़ा || 82

20) महाकवि कालिदास की रचनाओं में प्रकृति चित्रण
बिन्दूदेवी, डॉ. रामप्रकाश शर्मा, राजस्थान || 83

21) भारतीय समाज के परिपेक्ष्य में पंचायत राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका
डॉ. भावना डोभाल || 85

22) इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक की दलित कविता
डॉ. संजय गडपायले, परभणी || 88

23) उच्च शिक्षा के कौशल विकास शिक्षा अन्तर्गत निर्धारित हिंदी भाषा कौशल विकास पाठ्यक्रम ...
प्रा.डॉ.संजय जाधव, परभणी || 92

24) कत्यूरी ताम्रपत्रों का विश्लेषण
डॉ. मदन मोहन जोशी, हल्द्वानी || 98

25) महाश्वेता देवी का उपन्यास 'दुष्कर' और समाज
काना राम मीना, नई दिल्ली || 102

26) गरीबी और श्रम पलायन
श्रीमती स्नेहलता खलखो, सरगुजा || 106

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

Scanned with CamScanner

26

गरीबी और श्रम पलायन

श्रीमती स्नेहलता खलखो
सहा. प्राध्या. हिन्दी,
शास. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर
जिला — सरगुजा (छ.ग.)

प्राचीन समय से मानव घुमन्तू प्रकृति का रहा है तथा वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमता रहा है। यदि मानव समाज के उद्विकास का अध्ययन किया जाए तो उपर्युक्त कथन का अपने आप प्रमाणीकरण हो जायेगा। आखेट व्यवस्था और पशुपालन की अव्यवस्थाओं के कारण मानव अपने शिकार तथा पशुओं के चारे और पानी के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को निरन्तर भटकता रहता था। इन अव्यवस्थओं के बाद कृषि की अवस्था में जीवन में कुछ स्थायित्व अवश्य आया, किन्तु प्रवास की अखिल धारा नहीं रूकी। झूम खेती की प्रकृति के कारण मानव सामान्य रूप से प्रतिवर्ष एक स्थान से दूसरे स्थान की तलाश खेती के लिए करता रहा । पशुओं के चारे और पानी के कारण भी उसे स्थायित्व नही मिला। समय के बदलते वर्तमान में औद्योगिक युग आया और इस युग में तो मानव की प्रवासी प्रवृति को काफी प्रोत्साहित किया। आज प्रवास व्यक्ति की आदत का अभिन्न अंग हो गया है। एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना व्यक्ति की आदत में शुमार होता जा रहा है। विशेषत: नगरीय समाजों में इस प्रकार की प्रकृति का ज्यादा ही विकास हुआ। आज व्यवसाय तथा बेहतर विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। वहीं अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का जन्म और विकास हुआ है।

तथा अंग्रेजी के शब्द (Migration) का हिन्दी रूपान्तरण है।जिसका शाब्दिक अर्थ 'देशान्तर निवास' (The Act of Migrating) प्रवास का अर्थ है एक मूल स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को जाना यहाँ अस्थायी तौर पर निवास करना और अपने मूल से सम्पर्क बनाए रखना तथा कभी — कभी जाते रहना ।

पलायन की परिभाषा — पलायन की निम्न है —

(१) डेविडहीर के अनुसार — स्वभाविक निवास से अलग होना प्रवास है।

(२) बर्गेल के अनुसार — प्रवास जनसंख्या में स्थानान्तरण के लिए प्रयुक्त नाम है।

(३) डॉ. एस. सी. दुबे के अनुसार — प्रवास सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है, द्वारा जनसंख्या का अन्तर्गमन तथा बहिर्गमन होता है।

(४) जनांकिकीय शब्दकोश के अनुसार — प्रव्रजन का तात्पर्य एक भौगोलिक इकाई से दूसरी भौगोलिक इकाई के बीच होने वाली स्थानीय गतिशीलता से है, इसके अन्तर्गत जन्म — स्थान से सर्वेक्षित आवास किसी दूसरी स्थान में चला जाता है।

इस प्रकार वह प्रक्रिया है जो जनसंख्या को एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गतिशीलता को रेखांकित करता है।

पलायन के प्रकार — इतना तो निश्चित है कि भारतवर्ष में प्रवासी प्रवृति में निरन्तर वृद्धि हो रही है किन्तु यह प्रवासी प्रवृति एक ही प्रकार की नहीं है। प्रवृति और लक्षणों में प्रवास में भिन्नता पाई जाती है। संक्षेप में प्रवास के निम्न भाग हैं —

(१) दैनिक प्रवास — दैनिक प्रवास जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है ग्रामों से नगरों की ओर वह प्रवास है जो प्रतिदिन समान रूप से होता है। जो ग्राम शहरों से नजदीक होते हैं, वहाँ के निवासी नौकरी, व्यापार, शिक्षा तथा अन्य कारणों से रोजाना प्रात: ग्रामों से नगरों की ओर आते हैं और कार्य समाप्त हो जाने पर शाम को गाँव जाते हैं। इस प्रकार के प्रवास को दैनिक प्रवास के नाम से जाना जाता है।

(२) मौसमी प्रवास — ग्रामों से नगरों की ओर जो दूसरा प्रवास होता है, वह एक विशेष मौसम में ही होता है और जैसे ही वह मौसम समाप्त हो जाता है, प्रवासी प्रवृति भी समाप्त हो जाती है। जैसे फसल

Scanned with CamScanner

के काटने के समय, उत्सव के समय तथा अन्य मौसमी कार्यों के सम्पादन के लिए। जैसे ही मौसम में परिवर्तन होता है, प्रवास की प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाती है।

(३) आकस्मिक प्रवास — कभी — कभी प्रवास अचानक होता है। यह प्रवास दैनिक और मौसमी प्रवास से भिन्न प्रवृत्ति का होता है। कभी — कभी कुछ विशेष परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है। जिसके कारण से अचानक प्रवास करना हो जाता है। जैसे बीमारी, अदालत, सामाजिक और धार्मिक उत्सव या अन्य इसी प्रकार की परिस्थितियाँ।

(४) स्थायी प्रवास — स्थायी प्रवास वह है जिसमें व्यक्ति पूरी तरह गाँव को छोड़कर नगरों में निवास करने लगता है। जब एक बार व्यक्ति गाँव को छोड़कर नगर चला जाता है तो फिर उसकी इच्छा गाँवों की ओर लौटने की नहीं होती हैं।

(५) विजय के लिए प्रवास — इस प्रकार का मुख्य उद्देश्य विजय प्राप्त करना होता है। विजय प्राप्ति के उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रवास किया जाता है तथा विजय प्राप्त करने के बाद उस स्थान पर स्थायी रूप से बस जाता है।

(६) विवशतापूर्वक प्रवास — यह प्रवास का वह स्वरूप है, जिसे व्यक्ति विवशतापूर्वक स्वीकार करता है। आक्रमण के भय से अथवा प्राकृतिक शक्तियों के डर से इस प्रकार से प्रवास किए जाते हैं।

(७) बलपूर्वक प्रवास — यह प्रवास जबर्दस्ती कराया जाता है। अनेक व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा श्रमिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जाता है। उदाहरण के लिए अमेरिकनों द्वारा नीग्रों लोगों को ले जाना।

(८) स्वतंत्र प्रवास — यह प्रवास व्यक्ति की स्वतंत्र दशा का परिणाम होता है। आज भारत में अनेक डॉक्टर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक तथा अन्य व्यक्ति नौकरी आदि के लिए अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों की ओर प्रवास कर रहे हैं।

(९) नियंत्रित प्रवास — यह वह प्रवास है, जिस पर नियंत्रण लगाया जाता है, प्रवास के लिए रोका जाता है। कनाडा और आस्ट्रेलिया द्वारा काले लोगों पर प्रवेश नियंत्रण इस प्रकार का है।

(१०) आदिकालीन घुमन्तू प्रवास — इस प्रकार के प्रवास का सम्बन्ध आदिकाल से है। आदिकाल में मानव फलफूल और मांस की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते रहते थे। इस प्रकार के प्रवास को आदिकालीन घुमन्तू के नाम से जाना जाता है।

(११) आदिकालीन पर्यटन प्रवास — इस प्रकार के प्रवास का सम्बन्ध भी मानव के आदिकालीन जीवन से है। इस प्रवास की मौलिक विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होता है। पूरा का पूरा समूह एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रवास करता था। उदाहरण के लिए मछली पकड़ने के लिए किया जाने वाला प्रवास।

(१२) जमीन से उड़ान — इसका तात्पर्य है भूमि से स्थानान्तरित होना एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को चले जाना। कृषि कार्य के लिए स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान के लिए प्रवास करना।

गरीबी और ग्रामीण श्रम पलायन के कारण

प्रवास आधुनिक भारत की सबसे बड़ी समस्या है। इस समस्या के परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म और विकास होता है। प्रवास के प्रमुख कारण कौन से हैं ? एक व्यक्ति एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में क्यों जाता है ? क्या ऐसा करने में उसकी इच्छा प्रबल होती है या कुछ सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ होती हैं ? जिनसे विवश होकर प्रवास ही व्यक्ति के लिए एक मात्र रास्ता रह जाता है ? प्रवास के अनेक कारण हैं। इन कारणों में भारत में जो अधिक महत्वपूर्ण है, वे निम्नलिखित हैं —

(१) जनसंख्या में वृद्धि — प्रवास का पहला और मौलिक कारण जनसंख्या में होने वाली तीव्र वृद्धि है। यदि हम १९६१ के आँकड़ों की तुलना १९७१ से करें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस दस वर्षों में भारतीय जनसंख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का परिणाम यह होता है कि भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव पड़ता है।

(२) कुटीर उद्योगों का पतन — भारतीय ग्रामों में कृषि के साथ ही साथ कुटीर उद्योगों का

Scanned with CamScanner

आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व था। इन कुटीर उद्योगों की सहायता से व्यक्ति अपना आर्थिक जीवन व्यतीत करते थे।

(३) भूमिहीन कृषक — भारत में ऐसे किसान है, जो भूमिहीन की श्रेणी में आते हैं और जो खेती तो करते है किन्तु जिनके पास अपनी जमीन नहीं होती है। गाँवों में भूमिहीन कृषकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

(४) ऋणग्रस्तता — ऋणग्रस्ता भारतीय ग्रामीण जीवन की प्रमुख विशेषता है। भारत का प्रत्येक परिवार और व्यक्ति ऋणग्रस्तता का शिकार है। भारतीय ऋणग्रस्ता की मौलिक विशेषता यह है कि इसका एक पीढ़ी से दूसरी को हस्तान्तरण होता रहता है।

(५) सामाजिक योग्यताएँ — भारतीय ग्रामीण ढाँचा अत्यन्त ही रूढ़िवादी और परम्परावादी है। जो व्यक्ति ग्रामीण मान्यताओं और परम्पराओं की अवहेलना करता है, उसे अनेक प्रकार की अयोग्यताओं का शिकार होना पड़ता है। गाँवों की अपेक्षा नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा मिलती है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति ग्रामीण जीवन को छोड़कर नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों की ओर भागने के लिए विवश होते हैं।

(६) संयुक्त परिवार — भारत में संयुक्त परिवार की प्रथा के कारण व्यक्तियों में सामुहिक जीवन का विकास होता था। औद्योगिक परिस्थितियों और व्यक्तिवादी विचारधारा के कारण संयुक्त परिवारों का यह विघटन भी प्रवास का एक कारण है। जब व्यक्ति संयुक्त परिवार में रहता था, तो उसे आर्थिक तथा अन्य अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता था।

(७) पारिवारिक कलह — आधुनिक भारतीय परिवारों में कलह की मात्रा में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इस पारिवारिक कलह के कारण भी कुछ व्यक्तियों को नगरों की ओर प्रवास करना पड़ता है।

(८) धन कमाने के लिए — आधुनिक युग में पैसे के महत्व में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। कुछ व्यक्ति कृषि की उन्नति या व्यवसायों की स्थापना के लिए पैसा कमाना चाहते है और इसके लिए उन्हें गाँवों से नगरों की ओर प्रवास करना पड़ता है।

(९) अत्यधिक मजदूरी की आशा — गाँवों में मजदूरी की दर कम होती है। इसके अतिरिक्त गाँवों में जो मजदूरी दी जाती है। वह अन्न के रूप में होती है। अनेक व्यक्ति इस आशा और विश्वास के कारण गाँवों से नगरों की ओर प्रवास करते है कि नगरों में उन्हें अधिक मजदूरी मिलेगी।

(१०) नगरों का आकर्षण — यदि हम भारतीय ग्रामीण और नगरीय जीवन की तुलना करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि गाँवों की तुलना में नगरों में अनेक प्रकार की सुविधाएँ है। इन सुविधाओं में शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, सुरक्षा आदि प्रमुख है। नगरों के लगाव या नगरीय आकर्षण के कारण भी अनेक व्यक्ति ग्रामीण जीवन त्याग करके नगरों की ओर प्रवास करते है।

(११) उन्नतिशील जीवन — कुछ व्यक्ति ऐसे सोचते है कि यदि वे नगरों में निवास करेंगे, तो उनका भावी जीवन सम्पन्न और उन्नतिशील होगा। भविष्य के जीवन की यह आशा उन्हें नगरों की ओर स्थानान्तरित करती है।

गरीबी और ग्रामीण श्रम पलायन का ग्रामीण व्यवस्था पर प्रभाव — प्रवास के सामान्यतः लाभप्रद व हानिप्रद दोनों प्रकार के प्रभाव होते है जो निम्न प्रकार है —

पलायन के लाभप्रद प्रभाव —

(१) कृषि भूमि पर जनसंख्या के भार में कमी — जब कुछ ग्रामीण व्यक्ति प्रवाहित होकर शहर चले जाते हैं, तब ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव असहाय बढ़ जाता है। इससे कृषि जोतों के निरन्तर विभाजन की प्रवृति में रूकावट आती है तथा संयुक्त परिवार विघटित होने से
बच जाते हैं।

(२) श्रम विभाजन को बढ़ावा — प्रवास के कारण श्रम विभाजन को प्रोत्साहन मिलता है तथा श्रमिकों की कार्यकुशलता बढ़ती है। श्रम कौशल में वृद्धि का राष्ट्रीय उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

(३) शहरीकरण के लाभ — अत्यधिक

Scanned with CamScanner

माना में होने वाले शहरीकरण तथा उससे मिलने वाले लाभ प्रवास के कारण ही संभव होते है। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा लाभ तथा मनोरंजन की सुविधाएं कहीं अधिक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहर जाने वाले व्यक्ति इन समस्त सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। तकनीकी शिक्षा, प्रशिक्षिण तथा शोध आदि की सुविधा शहरों में उपलब्ध होती है।

(४) रोजगार अवसरों तथा श्रम पूर्ति के बीच सामंजस्य — अधिकतर देखा जाता है कि जिन स्थानों पर रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं, वहाँ श्रम — पूर्ति के न्यूनतम है। ठीक इसके विपरीत जिन स्थानों पर श्रम पूर्ति के बीच सामंजस्य की स्थापना हो जाती है।

(५) सामाजिक एकता तथा राजनीतिक जागृति — प्रवास के कारण मनुष्य आपसी भाई — चारे की भावना उत्पन्न होती है। राजनीतिक जागरूकता को भी प्रवास की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा सकता है। देश को विभिन्न भागों से एकत्रित श्रमिक जब खानों और कारखानों में साथ — साथ काम करते है, तब उनमें भाई — चारे की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

(६) धार्मिक तथा सांस्कृतिक कारक — प्राचीन नगरों के इतिहास से यह स्पष्ट होता है कि अनेक धार्मिक तथा सांस्कृतिक दशाएँ भी लोगों को नगरों की ओर आकर्षित करती है। नगरों की जीवन अधिक धर्म निरपेक्ष होने कारण उन कारण उन ग्रामीण क्षेत्रों के लोग नगरों में आकर रहना पसंद करते हैं। जहाँ साम्प्रदायिक संघर्षो के कारण जीवन अधिक असुरक्षित होता है। भारत में काशी, गया, मथुरा, हरिद्वार, अयोध्या तथा इसी तरह के अनेक दूसरे धार्मिक नगरों में जीवन के अन्तिम दिन बिताने की इच्छा भी लोगों को गाँवों से नगर की ओर खींच लाती है।

(ब) पलायन के हानिकारक प्रभाव

(१) सामाजिक एवं सांस्कृतिक अलगाव को जन्म — प्रवास के कारण एक ओर, मित्रों तथा कुटम्बीजनों के साथ सम्बन्धों में अन्तराल बढ़ता है तथा दूसरी ओर नए स्थान पर प्रवासियों के लिए अपना सामाजिक स्तर एवं स्थान बनाने में कठिनाई होती है। इस तरह प्रवासियों तथा गैर — प्रवासियों के बीच सामाजिक सांस्कृतिक अलगाव को जन्म मिलता है।

(२) गन्दी बस्तियों का जन्म — प्रवास के कारण प्रायः शहरों में जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाता है। अतः आवास, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता का जन्म होता है। भारत के औद्योगिक केन्द्रों में विद्यमान 'गन्दी — बस्तियाँ ' अति प्रवास की ही देन मानी जाती है। इन

गन्दी बस्तियों में सफाई, प्रकाश, शुद्ध पेयजल, पक्की सड़कों तथा सार्वजनिक सेवाओं का पूर्ण तथा अभाव है। शहरों में उत्पन्न अत्यधिक जनसंख्या के कारण दुर्घटनाओं की संख्या बहुत हद तक बढ़ जाती है। मकानों के किराये बढ़ जाते हैं। रोजगार की स्थिति में विषमता उत्पन्न हो जाती है। इस तरह प्रवास द्वारा समस्याओं का गाँवों से शहरों की ओर स्थानान्तरण होता है। उनका समापन नहीं हो पाता है।

(३) मानसिक असंतोष में वृद्धि — अधिकांश प्रवासी व्यक्ति अपने साथ बड़ी — बड़ी महत्वाकांक्षायें लेकर आते हैं परन्तु जब उन्हें अपनी महत्वकांक्षायें पूरी होती दिखाई नहीं पड़ती, तब उनमें मानसिक असंतोष फैलता है।

(४) व्यक्तित्व के विकास में बाधा — प्रवासियों में नये स्थान के प्रति कोई लगाव नहीं पाया जाता है। वे स्वयं को नये परिवेश में कठिनाई से समायोजित कर पाते है। अलगाव की भावना उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुँचाती है।

ग्रामीण तथा नगरीय प्रवास — सम्पूर्ण भारत में गांवों तथा नगरों दोनों ही क्षेत्रों में प्रवास की प्रवृति है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में यद्यपि वृद्धि हुई है, फिर भी किसान खाली समय में प्रवेश करते हैं। नगरों में निर्माण तथा विविध आर्थिक क्षेत्रों में कार्यों की अधिकता के कारण भी प्रवास की प्रवृति बढ़ी है। भारत में कुछ प्रदेशों में प्रवासिता अधिक है जबकि कुछ में कम है। यही प्रवृति केन्द्र शासित प्रदेशों में भी है।

Scanned with CamScanner

भारत में राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में ग्रामीण नगरीय प्रवासिता

केन्द्र / राज्य शासित प्रदेश	प्रवास का प्रतिशत ग्रामीण	प्रवास का प्रतिशत नगरीय
भारत	2.33	7.20
बिहार	1.53	5.98
लक्षद्वीप, मिनीकाय तथा अमीन दीव	1.15	100.00
केरल	1.20	2.45
अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह	4.20	33.39

आन्तरिक प्रवास की प्रवृतियाँ

प्रवास की दिशा प्रतिशत	कुल प्रवास प्रतिशत	राज्य के भीतर प्रवास प्रतिशत	अन्तर राज्यीय प्रवास
ग्राम से ग्राम की ओर	67.8	72.7	33.4
ग्राम से नगर की ओर	17.6	15.0	35.2
नगर से ग्राम की ओर	4.6	4.5	6.2
नगर से नगर की ओर	10.2	7.8	20.2
योग	100.00	100.00	100.00

भारत में अवधि के अनुसार प्रवासित

अवधि	प्रवास (प्रतिशत में)
1 वर्ष से कम	6.92
1 - 5 वर्ष	4.41
6 - 10 वर्ष	4.01
11 - 15 वर्ष	3.41
16 से अधिक	3.61
अवर्गीकृत	3.51

भारत में अन्तर्राज्यीय प्रवास

राज्य / संघीय क्षेत्र	राज्य / संघीय क्षेत्र की की जनसंख्या में सकल प्रवास का प्रतिशत	सकल प्रवासियों में अन्त प्रवासियों का प्रतिशत	सकल प्रवासियों में बाहय प्रवासियों का प्रतिशत
नागालैण्ड	35.00	92.85	7.15
सिक्किम	22.15	83.97	16.03
उत्तरप्रदेश	6.19	28.65	71.35
उड़ीसा	4.93	58.62	58.78
अरुणाचल प्रदेश	20.29	97.59	19.57

भारत में विदेशी में विदेशी प्रवास १९६१ – १९७१

देश	आव्रजन का प्रतिशत
नेपाल	45.17
पाकिस्तान	30.57
इग्लैण्ड	10.39
अमेरिका	1.23
श्रीलंका	0.50
अन्य	12.77

पलायन की चुनौती के लिए निम्न आर्थिक विकास के स्तर से लेकर उच्च स्तर तक एक संतुलित विकास करने की आवश्यकता है। निर्धन अशिक्षित और भूमिहीन श्रमिक गाँव से नगर में काम की खोज में न जायें इसके लिए गाँव में ही रोजगार के अवसर प्राप्त हों ऐसी सुविधाएँ दिलानी होगी। आज देश में सरकारी नौकरियाँ कम होती जा रही है। स्वदेश और विदेशी कम्पनियों में नौकरियाँ बढ़ती जा रही है। ये लक्षण देश के विकास के हित में नहीं है। विदेशी कम्पनियों में नौकरियाँ करोड़ों रुपये वेतन में लगा रही है। हजारों – हजारों की संख्या में विदेशी कम्पनियाँ यहाँ स्थापित हो रही है। आज हमें श्रमिकों के बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक, आर्थिक, विकास के कार्यों में समावेश होना है। ये कार्य चाहे नियोजक सरकार या अन्य संस्थाओं द्वारा किया जाय। श्रमिकों को वेतन एवं व्यवसाय में कार्य की दशाओं में सुविधाओं के अतिरिक्त उसको अन्य सांस्कृतिक सामाजिक लाभ देना होगा। इसीलिए आज देश में संतुलित रूप से विकास की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची :–

(१) उद्योग और समाज – डॉ. डी. एस. बघेल पृष्ठ २९४
(२) ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र – डॉ. जी. के. पृष्ठ १७४ – १७५
(३) उद्योग और समाज – डॉ. डी. एस. बघेल पृष्ठ २९५
(४) उद्योग और समाज – डॉ. डी. एस. बघेल पृष्ठ २९५ – २९६
(५) सामुदायिक विकास – शालिनी सक्सेना पृष्ठ १५६
(६) ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र – डॉ. जी. के. अग्रवाल पृष्ठ १८१
(७) सामुदायिक विकास – शालिनी सक्सेना पृष्ठ १५६, १५७, १५८
(८) भारत में नगरीय समाज – रीया खत्री पृष्ठ १०३, १०७, १०८
(९) भारतीय अर्थव्यवस्था – वी. सी. सिन्हा पृष्ठ २९७, २९८

❑❑❑

Scanned with CamScanner